प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 9 (2019–20)

हिन्दी–ब (कोड–85)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक– 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 9

पाटलिपुत्र नगर से थोड़ी दूर के एक आश्रम में कुछ दूसरा ही माहौल था। आश्रम एक टीले पर था। वहाँ बड़ी चहल–पहल थी लेकिन वह चहल–पहल कुछ दूसरे प्रकार की थी। यह आश्रम भी कुछ अलग किस्म का था। टीले पर बसे उस आश्रम के लम्बे–चौड़े आँगन में ताँबे, पीतल और लकड़ी के तरह–तरह के यंत्र रखे हुए थे। उनमें कुछ यंत्र गोल थे, कुछ कटोरे जैसे, कुछ वर्तुलाकार और कुछ शंकु की तरह के थे।

वस्तुतः वेधशाला थी। उस दिन यंत्रों के इर्द–गिर्द कुछ प्रसिद्ध ज्योतिषी और बहुत से विद्यार्थी एकत्र हुए थे। वहाँ के ज्योतिषियों ने हिसाब लगाकर पहले से ही भविष्यवाणी की थी कि ठीक किस समय ग्रहण लगेगा, कहाँ–कहाँ दिखाई देगा और कितने समय तक रहेगा। आज उन्हें देखना था कि उनका हिसाब ठीक निकलता है या नहीं। इसलिए सभी उत्सुकता से ग्रहण के क्षण का इंतजार कर रहे थे। कुछ आचार्य और विद्यार्थी चर्चा कर रहे थे कि ग्रहण क्यों लगता है। कुछ कह रहे थे, ''धर्म ग्रंथों में लिखा है कि ग्रहण के समय राहु नाम का राक्षस सूर्य और चंद्र को निगलता है। हमें धर्म ग्रंथों की बातों पर यकीन करना चाहिए।''

1. आश्रम के आँगन में क्या रखा था तथा उनका आकार कैसा था? 2

उत्तर : आश्रम के आँगन में ताँबे, पीतल और लकड़ी के यंत्र रखे थे। उनमें से कुछ यंत्र गोल, कुछ कटोरे जैसे, कुछ वर्तुलाकार और कुछ शंकु की तरह के थे।

2. आश्रम में चहल–पहल क्यों हो रही थी? 2

उत्तर : आश्रम में कुछ प्रसिद्ध ज्योतिषी और विद्यार्थी सूर्यग्रहण देखने के लिए एकत्र हुए थे।

3. आश्रम में उपस्थित सभी लोग ग्रहण लगने का इंतजार क्यों कर रहे थे? 2

उत्तर : आश्रम में उपस्थित सभी लोग ग्रहण लगने का इंतजार इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्हें अपनी गणना की सत्यता जाँचनी थी।

4. धर्म ग्रंथों में ग्रहण के बारे में क्या लिखा है? 2

उत्तर : धर्म ग्रंथों में यह लिखा है कि ग्रहण के समय राहु नाम का राक्षस सूर्य और चंद्र को निगल लेता है।

5. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर : ज्योतिष और ग्रहण।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 6

चंदा तारों–सी सहज कांति, नदियों में है मुस्कान भरी,
है पवन–झकोरों में दुलार खेतों में है दौलत बिखरी,
पग–पग मेरा विश्वास भरा,
तप से है यह जीवन निखरा,
प्रखर कर्म का पाठ सतत–
पढती मैं भारत माता हूँ।।
मैं वज्र–सदृश विपदाओं को भी अनायास सह लेती हूँ,
सुधा–दान कर औरों को, मैं विष पीकर मुस्काती हूँ,
धीरज का पाठ पढ़ाती हूँ,
गौरव का मार्ग दिखाती हूँ,
मैं सहज बोध, मैं सहज शक्ति–
सुविवेकी भारत माता हूँ।।
मूर्तियाँ बना डाली सजीव, अनगढ़ पत्थर को काट–काट,
बंधुता–प्रेम को फैलाया, अपना ही अंतर बाँट–बाँट,
जिसके गीतों से जगत् मुग्ध,
जिसके नृत्यों पर जगत् मुग्ध,
जिसकी कविता– धारा अविरल–
बहती वह भारत माता हूँ।।

1. 'खेतों में दौलत बिखरी' होने से कवि का क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर : 'खेतो में दौलत बिखरी होने' से कवि का यह तात्पर्य है कि खेतों में अच्छी फसलें होती हैं।

2. भारतमाता को सुविवेकी किसलिए कहा गया है? 2

उत्तर : भारतमाता को सुविवेकी इसलिए कहा गया है क्योंकि वह अपने सहज ज्ञान और शक्ति से सभी को धीरज का पाठ पढ़ाती हुई गौरव अनुभव करने का मार्ग दिखाती है।

3. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

'मैं वज्र–सदृश विपदाओं को भी अनायास सह लेती हूँ,
सुधा–दान कर औरों को, मैं विष पीकर मुस्काती हूँ।'

उत्तर : भारत माता वज्र के कठोर–से–कठोर विपत्तियों (मुसीबतों) को अनायास सह लेती है। वह अमृत के समान अन्न–जल एवं नाना प्रकार के फल–फूल देकर मनुष्यों का पालन–पोषण करती हैं, और जो घातक तत्त्व हैं, उनको आत्मसात कर लेती है।

अथवा

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा।
लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं।
किंतु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते हैं।
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा।। लक्ष्य तक.....।
धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही बेध करता
लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा।। लक्ष्य तक.....।
बस वही है पथिक जो पथ पर निरंतर अग्रसर हो
हो सदा गतिशील जिसका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतर हो।
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा।। लक्ष्य तक.....।
बाल रवि की स्वर्ण किरणें निमिष में भू पर पहुँचती
कालिमा का नाश करती, ज्योति जगमग जगत धरती
ज्योति के हम पुंज फिर हमको अमा से भीति कैसा।। लक्ष्य तक.....।

1. सूर्य की किरणें पृथ्वी पर कितनी देर में पहुँचती हैं और क्या करती है?

उत्तर : सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पलक झपकते ही/क्षण भर में पहुँच जाती हैं। अंधेरे को नष्ट करके पृथ्वी को उजाले से भर देती हैं।

2. 'लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : अपने लक्ष्य को बेधने के लिए जो बाण साधा जाता है, वह फिर रूकता नहीं, लक्ष्य को बेध देता है।

3. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

''लक्ष्य है, अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं,
किंतु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते हैं''

उत्तर : इन पंक्तियों का आशय यह है कि पथिक को जिस लक्ष्य पर पहुँचना है वह बहुत दूर और पहुँचने का रास्ता भी कठिन है, यह भी वह (पथिक) जानता है। किंतु पथिक रास्ते में आए काँटों अर्थात् कठिनाइयों को वह कुछ भी नहीं समझता। वह उसे फूल के समान ही मानता है। जिससे लक्ष्य तक पहुँचना आसान होगा।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए।** 2

उन्नति, विद्यालय, अमर

उत्तर : **उन्नति–** उ + न् + न् + अ + त् + इ
विद्यालय– व + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
अमर– अ + म् + अ + र् + अ

4.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग कीजिए। 1

सवार, उगली, हसना

उत्तर : **सवार–** सँवार
उगली– उँगली
हसना– हँसना

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग कीजिए। 1

सुदर, पतग, मगल

उत्तर : **सुदर–** सुंदर
पतग– पतंग
मगल– मंगल

5. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित स्थान पर नुक्ता का प्रयोग कीजिए।** 1

कमजोर, फोटो, कलम

उत्तर : **कमजोर–** कमज़ोर
फोटो– फ़ोटो
कलम– क़लम

6.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानकर लिखिए। 1

गोपनीय, साहित्यिक, लड़का

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	गोप	अनीय
2.	साहित्य	इक
3.	लड़	आका

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानकर लिखिए। 1

प्रयत्न, सुबोध, अनपढ़

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	प्र	यत्न
2.	सु	बोध
3.	अन	पढ़

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में मूल शब्द के साथ जुड़े उपसर्ग और प्रत्यय को अलग कर लिखिए। 1

अपमानित, अभिमानी, बदनसीबी

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	अप	मान	इत
2.	अभि	मान	ई
3.	बद	नसीब	ई

7.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार शब्दों मे सही संधि–विच्छेद कीजिए। 4

सेवार्थ, वृक्षारोपण, नरोत्तम, इत्यादि, निश्छल।

उत्तर : सेवार्थ– सेवा + अर्थ
वृक्षारोपण– वृक्ष + आरोपण
नरोत्तम– नर + उत्तम
इत्यादि– इति + आदि
निश्छल– निः + छल।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन वाक्यों में उचित विराम चिन्ह का प्रयोग कीजिए। 3

1. राम ने कहा मैं अमेरिका जाऊँगा
2. बाप रे बाप इस लड़की की जुबान तो कैंची की तरह चलती है।
3. मैं एम बी ए करना चाहता हूँ
4. किधर चले तुम कहाँ रहते हो।

उत्तर :

1. राम ने कहा– ''मैं अमेरिका जाऊँगा''।
2. बाप रे बाप! इस लड़की की जुबान तो कैंची की तरह चलती है।
3. मैं एम. बी. ए. करना चाहता हूँ।
4. किधर चले? तुम कहाँ रहते हो?

खण्ड–ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 25

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5

1. खरबूजे बेचने वाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था? 2

उत्तर : खरबूजे बेचने वाली कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखकर फफक–फफककर रो रही थी क्योंकि उसके बेटे की मृत्यु हो गई थी। इसलिए लोग उससे खरबूज़े नहीं खरीद रहे थे। खरबूज़े न बिकने का एक कारण घर में मृत्यु के कारण सूतक का होना भी था।

2. एवरेस्ट को नजदीक से देखकर लेखिका को कैसा अनुभव हुआ? 2

उत्तर : एवरेस्ट को नजदीक से देखकर लेखिका को बहुत अच्छा लगा और वह भौंचक्की होकर देखती रही। वह एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से से घिरी टेढ़ी–मेढ़ी बर्फीली नदी को निहारती रही।

3. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक ने अतिथि को क्या खिलाया? 1

उत्तर : सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक ने अतिथि को डिनर की बजाय खिचड़ी खिलाई।

9. लेखिका के तंबू में गिरे बर्फ पिंड का वर्णन किस प्रकार किया गया है? 5

उत्तर : लेखिका बचेंद्री पाल के तंबू में गिरा बर्फ पिंड बहुत ही भयानक था। वह बर्फ पिंड ल्होसे ग्लेशियर से टूट कर नीचे गिरा था। इसलिए उसका विशाल हिमपुंज बन गया था हिमखंडों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय हिमखंड ने एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आया था जिसके कारण पर्वतारोहियों का कैंप पूरी तरह से तहस–नहस हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि चोट तो सभी को लगी थी परंतु किसी की भी मृत्यु नहीं हई थी। लेखिका तो हिमपिंडों में दब गई थी उन हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उसे बर्फ की कब्र से बाहर निकाला गया।

अथवा

गणेश शंकर विद्यार्थी ने धार्मिक लोगों को मूर्ख क्यों माना है? क्या धार्मिक लोग वास्तव में मूर्ख होते हैं?

उत्तर : गणेश शंकर विद्यार्थी के अनुसार धार्मिक लोग मूर्ख होते हैं। वे धर्म के नाम पर आँखें मूँद कर विश्वास कर लेते हैं। धार्मिक लोग धर्मगुरूओं, संतों, मुल्ला–मौलवियों

के खरीदे हुए गुलाम बन जाते हैं। यदि उसके धर्मगुरू यह कह दें कि उनका धर्म खतरे में हैं, तो वे अंधे बनकर धर्मयुद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं और अपनी जान की भी परवाह नहीं करते। ऐसे लोग दूसरे धर्म से लड़ते–लड़ते शहीद होने में गौरव का अनुभव करते हैं। इसलिए वे मूर्ख हैं। वे समझ नहीं पाते कि उनके धार्मिक नेता या धर्मगुरू उन्हें धर्म के नाम पर लड़ा रहे हैं और इसका लाभ धार्मिक नेताओं को मिलता है।

लेखक के विचारानुसार सभी धर्मप्रिय लोग मूर्ख नहीं होते। वे लोग केवल धर्म के तत्त्वों में विश्वास रखते हैं, धार्मिक झगड़ों में नहीं। अतः सभी धार्मिक लोगों को मूर्ख कहना बिल्कुल गलत है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5

1. कवि रैदास ने ईश्वर को 'गरीब–निवाजु' क्यों कहा है? 2

उत्तर : कवि रैदास ने ईश्वर को गरीब–निवाजु इसलिए कहा है क्योंकि वे गरीबों तथा दीन–दुखियों पर कृपा करके उनके दुख दूर करते हैं।

2. रहीमदास जी यह क्यों मानते हैं कि अपना दुख मन में ही छिपाकर रखना चाहिए? 2

उत्तर : रहीमदास जी के अनुसार अपने मन का दुख अपने मन में ही छिपाकर रखना चाहिए। दूसरे लोग उसे (दुख/परेशानी) को सुनकर खुश होते हैं। कोई भी व्यक्ति कभी भी किसी के दुख को कम नहीं करता है।

3. 'आदमीनामा' कविता के कवि कौन हैं? 1

उत्तर : 'आदमीनामा' कविता के कवि हैं– नजीर अक. बरावादी।

11. सुखिया के पिता को किस कारण से अपमानित और दण्डित किया गया? आपकी दृष्टि में क्या यह उचित है? 'एक फूल की चाह' कविता के आधार पर उत्तर लिखिए। 5

उत्तर : सुखिया के पिता को मंदिर में घुसने पर अपमानित किया गया। सवर्ण या उच्च जाति के लोगों ने उस पर यह आरोप लगाया कि वह एक अछूत है, गंदा है। उसने मंदिर में प्रवेश करके वर्षों से बनाई हुई पवित्रता को नष्ट कर दिया है। यह आरोप लगाकर उन्होंने उसे धक्के दे– देकर मंदिर से बाहर निकाल दिया इतना करके ही उन्हे संतोष नहीं मिला तो उसे न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया और उस पर मुकदमा चलाया गया। न्यायालय ने उसे न्याय देने के स्थान पर सात दिनों के लिए कारावास की सजा सुना दी। अतः वह अपनी बीमार बेटी की दवा–दारू भी न करा सका और वह (बेटी) चल बसी। ये दोनों ही व्यवहारों से उस पर अत्याचार किया गया। यह अत्यन्त निंदनीय है। यदि समाज के लोग सच में जाग्रत हैं, तो ऐसा निंदनीय कृत्य करने वाले लागों और न्यायाधीशों के विरूद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

अथवा

सामाजिक और आर्थिक विषमता दूर करने की जिम्मेदारी किसकी है? 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के आधार पर स्पष्ट उत्तर लिखिए।

उत्तर : 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता सामाजिक और आर्थिक असमानता पर करारा व्यंग्य है। इस कविता में यह वर्णन किया गया है कि जो लोग खुशबू देने वाली अगरबत्तियाँ बनाते हैं उनके जीवन में कितनी गंदगी और बदबू है। वे लोग नाले के किनारे, गंदगी के ढेरों के बीच गंदे मोहल्लों में रहने के लिए विवश हैं। उन अगरबत्तियाँ बनाने वालों में बच्चे भी हैं, सुंदर स्त्रियाँ भी हैं और प्रौढ़ वृद्ध पुरूष एवं वृद्ध महिलायें भी हैं। वे लोग खुद गंदगी और मजबूरी में रहकर भी औरों को खुशबू बाँटते हैं। समाज में निम्न वर्ग के लोग उच्च वर्ग के लोगों को सुविधा देने के लिए अपने जीवन की बलि चढ़ा देते हैं।

कवि यह असमानता दिखाकर समाज से यह कहना चाहता है कि इस सामाजिक और आर्थिक असमानता दूर करना सरकार, प्रशासन एवं समाज के प्रबुद्ध वर्ग का काम है। समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि सभी को समानता का अधिकार मिलना चाहिए।

12. "घायलों की सहायता के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है"– गिल्लू के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि किसी घायल के प्रति आपके व्यवहार में क्या विशेषता होनी चाहिए? 3

उत्तर : घायल व्यक्ति असहाय होता है, लाचार होता है। वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकता। उसके हाथ–पैर काम नहीं करते। इसलिए घायल की सहायता करने के लिए बहुत धैर्य और दया की आवश्यकता होती है। यदि वह मरहम, दूध, पानी ग्रहण नहीं कर पा रहा हो तो इसके लिए अनेक तरीके खोजने पड़ते हैं। घायल के उपचार पर पूरा ध्यान देना पड़ता है। अतः घायलों का उपचार करने वाले के मन में बहुत धैर्य, कोमलता एवं दया होनी चाहिए।

अथवा

'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' स्मृति पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। इस दृढ़ निश्चय के कारण फल की चिंता समाप्त हो गई। उसे

लगा कि कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना अब उसका काम नहीं है। फल तो प्रभु–इच्छा पर निर्भर है। इसलिए वह फल की चिंता छोड़कर कुएँ में प्रवेश कर गया।

13. हामिद खाँ ने लेखक से खाने का पैसा लेने से इन्कार क्यों किया ? 2

उत्तर : हामिद खाँ लेखक का प्रेम और भाईचारापूर्ण व्यवहार देखकर बहुत प्रभावित हो गया। उसने लेखक को अपना मेहमान मान लिया। इसलिए उसने लेखक से खाने का पैसा लेने से इन्कार कर दिया।

खण्ड–घ (लेखन) 25

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। 5

1. **ग्लोबल वार्मिंग।**
   • ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ • प्राकृतिक असंतुलन • वार्मिंग के कारण • उपाय
2. **टेलीविजन : वरदान या अभिशाप।**
   • विवाद का विषय • ज्ञान–वृद्धि • पाठ्यक्रम संबंधी कार्यक्रम • हानियाँ • निष्कर्ष
3. **जल ही जीवन है।**
   • जल 'जीवन' का पर्याय • प्रकृति का वरदान • जल–संकट की स्थिति • जल–प्रबंधन के उपाय

उत्तर :

1. ग्लोबल वार्मिंग

हमारी धरती जीवनदायिनी है। चंद्र–मंगल ग्रहों पर जीवन नहीं है। इसका कारण है–पर्यावरण धरती पर ऐसी जलवायु है कि वनस्पति पैदा हो सकीं, जल के स्रोत बन सके और जीव उत्पन्न हो सका। दुर्भाग्यवश आज पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। जीवन के लिए जितना ताप चाहिए, जितना जल चाहिए, जितने वृक्ष–वन चाहिए, जितनी बर्फ, जितने ग्लेशियर और नदियाँ चाहिए, उन सबमें बाधा उत्पन्न हो गई है। धरती पर इन सबका संतुलन बिगड़ गया है। चौंकाने वाली बात यह है आज हर दिन कई एकड़ जमीन समुद्र में समाती जा रही है। उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव के बर्फीले पहाड़ पिघल–पिघल कर समुद्र में मिलते जा रहे हैं। जल की इस विनाशलीला का कारण है– पर्यावरण में बढ़ता हुआ ताप। जितनी मात्रा में हम फ्रिज, ए.सी. या कार्बन छोड़ने वाले रसायनों का उपयोग कर रहे हैं वातावरण में डीजल–तेल आदि खतरनाक रसायनों को जला रहे हैं। साथ ही नमी उत्पन्न करने वाले जंगलों और वनस्पतियों को काट रहे हैं, उससे भीषण गर्मी बढ़ रही है। वायुमंडल में गर्मी का एक गुब्बार–सा छा गया है। जिससे हमारे पर्यावरण पर कवच की तरह जमी ओजोन गैस की परत में छेद हो गया है। इससे सूर्य की विषैली किरणें तरह–तरह के रोग पैदा कर रही हैं। इस ताप को बढ़ाने में आज का मनुष्य दोषी है। वह सुख–सुविधा के मोह में अपनी मौत का सामान इकट्ठा कर रहा है। धरती को ताप से बचाने का एक ही उपाय है– अपने पापों का प्रायश्चित करना। हमें वातावरण में नमी उत्पन्न करने के लिए अधिक–से–अधिक पौधे लगाना, हरियाली उगाना, मशीनी जीवन की बजाय प्रकृति की ओर लौटना तभी धरती पर जीवन बचाना संभव है।

2. टेलीविजनः वरदान या अभिशाप

दूरदर्शन विद्यार्थी जीवन के लिए लाभदायक है या हानिकारक, यह प्रश्न विवाद का विषय है। दूरदर्शन से लाभ अधिक हैं। यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। दूरदर्शन में दिखाए जाने वाले कार्यक्रम में देश–विदेश की, जल–थल–नभ, पहाड़ों, नदियों, समुद्र और रेगिस्तान की, नगर एवं ग्राम की, भूतकाल और वर्तमान की जितनी भी खबरें दिखाई जाती हैं। ये सभी खबरें विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन करती हैं। हमें अपने घर में बैठे पूरे विश्व की जीती–जागती वस्तुएँ साकार रूप में हमारे सामने दिखाई जाती हैं। दूरदर्शन के माध्यम से छात्रों के लिए अनेक उपयोगी पाठ्यक्रम संबंधी कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। ये पाठ्यक्रम दूर–दराज के गाँवों तक भी पहुँच जाते हैं। इससे दूरस्थ शिक्षा के द्वार खुल गए हैं। इसके अतिरिक्त किसानों के लिए खेती के नए–नए तरीके अच्छे बीजों की जानकारी दूरदर्शन के माध्यम से दी जाती है। प्रायः देखा जा रहा है कि दूरदर्शन छात्रों के लिए सहायक न बनकर बाधक बन रहा है। अधिकतर छात्र दूरदर्शन के उन कार्यक्रमों में रूचि ले रहे हैं जिनका संबंध पाठ्यक्रम से न होकर मनोरंजन से होता है। फिल्में, खेल, सीरियल आदि देखना उन्हें रूचिकर लगता है। ऐसी स्थिति में पढ़ाई में ध्यान न देकर अधिक समय मनोरंजन में खर्च कर देते हैं। इस विषय में यही कहा जा सकता है कि छात्रों को दूरदर्शन का सही उपयोग करना चाहिए। उन्हें पढ़ाई को ध्यान में रखते हुए स्वंय पर संयम रखना चाहिए। इस प्रकार दूरदर्शन के गलत उपयोग को रोककर उसके लाभ लिए जा सकते हैं।

3. जल ही जीवन है

जल है तभी जीवन संभव है। वैज्ञानिक कहते हैं– मनुष्य जल से जन्मा है। जल नहीं, कोई भी खाद्य और पेय पदार्थ नहीं बन सकता। इसके बिना मनुष्य तो क्या किसी भी जीव का पृथ्वी पर जीवन संभव ही नहीं है।

जल प्रकृति का वरदान है। इसे फैक्ट्रियों में नहीं बनाया जा सकता है। हाँ, इससे फैक्ट्रियाँ चलाई जा सकती हैं। धरती पर जितना जल है उसका 97.3 प्रतिशत जल खारे समुद्र में एकत्र है। इसका उपयोग नहीं हो सकता 12 प्रतिशत जल दक्षिणी और उत्तरी ध्रुवों में हिम के रूप में जमा है। शेष बचे जल में से 0.06 नदियों–झरनों में प्रवाहित है। मात्र 0.01 प्रतिशत जल धरती के गर्भ में सुरक्षित है। आज हम जल–संकट से गुजर रहे हैं। उसके दो कारण हैं–बढ़ती आबादी और जल का कुप्रबंधन। आबादी बढ़ रही है तो उसको पीने–नहाने –धोने के लिए जल चाहिए। यदि बढ़ती हुई जरूरतों के हिसाब से मनुष्य जल का विवेकपूर्ण प्रबंधन कर लें, तब ही जल–संकट दूर हो सकता है। परन्तु इस दिशा में आज मनुष्य चिंतित तो है, पर तैयार नहीं है। वर्षा का जल पेय है, उपयोगी है। परन्तु उसका 80 प्रतिशत भाग नदी–नालों में बहकर वापस समुद्र में चला जाता है। यदि उस जल को जंगलों वनस्पतियों, तालाबों या भू–गर्भय स्रोतों में रोक लिया जाए तो हम जल–संकट से उबर सकते हैं। इसके लिए जंगलों को हरा–भरा और समृद्ध बनाना जरूरी है। दूसरे, खुले और ढके हुए तालाबों को स्वच्छ और भरपूर रखना आवश्यक है। तीसरे, वर्षा–जल को भूमि के गर्भ में पहुँचना आवश्यक है।

15. अपने जन्मदिन पर अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए। 5

उत्तर :

P.N.-104, बहादुर कॉलोनी
मालवीय नगर, जयपुर
दिनांक : 21 सितम्बर, 2019
प्रिय मित्र रितेश
सप्रेम नमस्कार,

आशा है कि तुम स्वस्थ एवं आनंदपूर्वक होंगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ।

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि इस बार मेरा जन्म दिन धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ चल रही हैं। इस अवसर पर मैंने अपने सभी मित्रों को निमंत्रित किया है। तुम 15 अक्टूबर को ही यहाँ आ जाना। 16 अक्टूबर को जन्मदिन की पार्टी है और मैं तुम्हें 17 अक्टूबर से पहले नहीं जाने दूँगा। अभी कार्यक्रम की रूपरेखा बननी शेष है। निमंत्रण पत्र भी तुम्हारे पास पहुँच जाएगा। आशा है तुम आकर मेरे प्रति अपने स्नेह तथा प्रगाढ़ मित्रता का परिचय दोगे। शेष वार्त्तालाप मिलने पर करेंगे।

तुम्हारा मित्र
निशांत गोयल

अथवा

सत्संगति का महत्त्व बताते हुए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

उत्तर :

दुर्गा कॉलोनी, महावीर नगर
जयपुर
दिनांक : 20 मार्च, 2019
प्रिय अमित,

आशा है तुम प्रसन्न होंगे। तुम्हारे दोस्त भी बन गए होंगे। कैसे हैं तुम्हारे दोस्त ? लिखना। दोस्ती का बहुत प्रभाव होता है। इसलिए तुम अपने मित्रों का चुनाव बहुत सोच–समझकर करना। अच्छे मित्रों के साथ रहने से तुम्हारे मन, विचार और भावों पर भी अच्छा प्रभाव होगा। जो तुम्हें गलत काम करते दिखें तो उन्हें तुरन्त छोड़ देना क्योंकि गलत काम जल्दी सीख लेते हैं। अतः अच्छे मित्रों के साथ संगति करना ताकि अच्छे इंसान बन सको। अपनी पढ़ाई पर विशेष ध्यान देना।

आशा है, बड़ी बहन के इस सुझाव की ओर ध्यान दोगे।

तुम्हारी बहन
सलोनी

16. दिए गए चित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 5

उत्तर : यह चित्र चरखे का है जिसने भारत को आत्मनिर्भर बनाया। महात्मा गाँधी इसी चरखे से सूत कातते थे और भारतवासियों से सूत कातने को कहते और स्वराज्य का पाठ पढ़ाते। आज चाहे चरखे की जगह बड़ी–बड़ी मशीनें आ गई हैं किन्तु गाँधी जी ने इसी के बल पर गोरों की अत्याचारी सरकार को वापस इंग्लैण्ड भेज दिया था।

अथवा

उत्तर : यह चित्र सड़क का है। अनेक कारें, जीप और बसें आ–जा रही हैं। एक ट्रैफिक पुलिस वाला दिखाई दे रहा है। यह सड़क यातायात नियंत्रण कर रहा है। इसका काम है सड़क पर आने वाले वाहनों को नियंत्रण में रखना जिससे दुर्घटना न हो।

17. नवीं कक्षा में गणित विषय को समझने मे आने वाली कठिनाइयों के विषय में दो मित्रो के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए। 5

उत्तर :

प्रशांत– सुनिल ! मुझे गणित विषय बिल्कुल नहीं भाता ! क्योंकि इस विषय के फार्मूले मुझे याद नहीं होते।

सुनिल– परंतु प्रशांत! मुझे तो यह विषय पढ़ने में बड़ा मजा आता है।

प्रशांत– तुम्हें तो गणित के सब फार्मूले अच्छे से याद हो जाते हैं। पर मैं क्या करूँ।

सुनिल– प्रशांत ! मै तुम्हें गणित के फार्मूले याद करने के आसान तरीके समझाता हूँ। जब तुम्हें समझ में आ जाएँगे और याद हो जाएँगे तो तुम्हें सब आसान लगेगा।

प्रशांत– हाँ, गणित में नंबर तो अच्छे आते हैं। ठीक है, अब मैं विशेष ध्यान दूँगा।

सुनिल– ठीक है, तुम मेरे घर शाम को 5–6 बजे के बीच तीन–चार दिन आ जाओ। गणित के सब फार्मूले समझा दूँगा, फिर तो तुम्हें गणित आसान लगने लगेगा।

प्रशांत– ठीक है, मित्र! धन्यवाद।

अथवा

आरती एक समाज सेविका है और उसकी सहेली पूजा एक गृहिणी दोनों के मध्य हुए वार्तालाप को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर :

पूजा– आरती! तुम कहाँ–कहाँ घूमती रहती हो? कभी घर में भी रहा करो।

आरती– हाय पूजा ! क्या करूँ ? दो दिन बाद हमारी पार्टी के अध्यक्ष आने वाले हैं।

पूजा– तो फिर घर कैसे सँभालती हो?

आरती– नौकर हैं न! सुबह चाय–नाश्ता मैं बना जाती हूँ बाकी काम नौकर संभाल लेते हैं।

पूजा– मेरे विचार से तो घर–गृहस्थी वाली महिलाओं को इन कामों में नहीं जाना चाहिए।

आरती– क्यों? क्या काम–काज करने वाले पुरूष समाज–सेवा नहीं करते?

पूजा– परन्तु घर भी तो सँभालना चाहिए। नौकरों के भरोसे घर छोड़ना ठीक नहीं।

आरती– जब सपने बड़े हों तो सामंजस्य भी करना पड़ता है। मुझे तो कोई परेशानी नहीं होती, सब ठीक से हो जाता है।

18. गाँधी प्लेस भगवती साड़ी शोरूम में 2 अक्टूबर से लेडीज–सलवार सूट और साडियों पर 25 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

भगवती साड़ी शोरूम

नया डिजाइन! मौका मत छोड़िए! जल्दी कीजिए।

विशाल धमाका! 25% की छूट के साथ

दिनांक– 2 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक

दुल्हन के लहँगे, डिजाइनर साड़ियों और लेडिज सलवार सूटों पर 25% की छूट के साथ नया माल!

सम्पर्क

भगवती साड़ी शोरूम

गाँधी प्लेस, दिल्ली

अथवा

2 अक्टूबर, 2019 को सायं सात बजे 'रवीन्द्र मंच' में एक कवि सम्मेलन है। समाचार– पत्र में विज्ञापन दीजिए।

उत्तर :

विशाल कवि सम्मेलन

रवीन्द्र मंच, जयपुर में

दिनांक– 2 अक्टूबर, 2019

सायं– 7 बजे से रात्रि 10 बजे तक

आमंत्रित कवि– अरुण जैमिनी, प्रख्यात मिश्रा, राजीव सिंघल, अम्बर रंजना भटनागर, ओम नागर, कुमार अजय।

आप सादर आमंत्रित है!

आयोजक

शुभम मिश्रा एवं कृष्ण वर्मा

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online